उड़ना नहीं सीखा था मैंने अपनी मां की कोख में

❑ *अमृत रंजन*

अमृत रंजन

28 अगस्त, 2002, दिल्ली में जन्म। दिल्ली पब्लिक स्कूल, पुणे में आठवीं कक्षा के विद्यार्थी।
बचपन से कविताएं लिखने का शौक । पहली कविता आठ साल की उम्र में। ब्लॉगजीन 'जानकीपुल' में कविताएं प्रकाशित। चेतन भगत की 'हाफ गर्लफ्रेंड' पर लिखी उनकी समीक्षा 'जानकीपुल' 'आजतक' में प्रकाशित एवं चर्चित।
Email : amrut.dps@gmail.com

चिड़िया

उड़ना नहीं सीखा था,
मैंने अपनी मां की कोख में
एक ही बार में नहीं उड़ पाई मैं
गिरी मैं कई बार
हुआ दर्द
लेकिन उड़ने के लिए हुई
मैं फिर तैयार
बार-बार, बार-बार
गिरकर भी मैंने नहीं मानी मैंने हार।

एक दिन मैं पेड़ की सबसे ऊंची टहनी पर थी
डरने से किया इन्कार
कूदी मैं, फड़फड़ाए पंख
देखा कि जमीन मेरे नीचे है,
हवा मेरे पीछे है,
उड़ रही थी मैं, हवाओं के साथ।

(31 जनवरी, 2014)

अगर हम उसके बच्चे हैं

अगर हम उसके बच्चे हैं
तो वह हमें अमर क्यों नहीं बनाता।
क्या वह अमर होने का लाभ,
केवल खुद लेना चाहता?

अगर हम उसके बच्चे हैं
तो वह इस दुनिया में आ,
अनाथों के लिए मां की ममता,
क्यों नहीं जता जाता?

अगर हम उसके बच्चे हैं,
तो वह, जिसे न किसी ने देखा
न किसी ने सुना है, वह
अपने बच्चे को भूखा मरते
हुए कैसे देख पाता?

अगर हम उसके बच्चे हैं,
तो वह हम भाई-बहनों को,
एक-दूसरे की छाती काट देने से
क्यों नहीं रोक जाता?

अगर हम उसके बच्चे हैं
तो वह हमारे सबसे अच्छे
भाइयों और बहनों को,
मौत से पहले क्यों मार देता?

मैं पूछता हूं क्यों?
ऐसे कोई अपने बच्चों को पालता है?

(31 जनवरी, 2014)

अब्बल सपनों की दुनिया

मां चाहती थी परीक्षा में अव्वल आऊं
पा की भी यही चाहत थी।
लेकिन मैं यह नहीं चाहता था।
मैं बस सपनों को देखने की दौड़ में
अब्बल आना चाहता था।
जरा सोचिए कि मैंने सपना ही
क्यों चुना?
सपना,
इसलिए कि यह वही चीज है
जिसकी आप पूरे दिल से चाहत करो,
तो भी यह अपना मुंह मोड़ के,
किसी और के दिल में
जगह बनाकर
आखिर में
मुंह मोड़ के चला जाएगा।
मैं इस सपने को मना कर,
सपना पूरा करूंगा।
और आखिर मैं
सपने से मुंह मोड़ के,
काली रात में
समा जाऊंगा

(19 फरवरी, 2014)

कागज का टुकड़ा

एक कागज के टुकड़े का,
इस जमाने में,
मां से ज्यादा मोल हो गया है।
एक कागज के टुकड़े से
दुनिया मुट्ठी में आ सकती है।

एक कागज के टुकड़े से
लड़कियां खुद को बेच देती हैं।
लड़के खरीद लेते हैं।
एक कागज के टुकड़े से
छत की छांव मिलती है।

लेकिन जिसके पास कागज
का टुकड़ा नहीं है
उसका क्या होता है?
रात बिन पेट गुजारनी पड़ती है।
आंसुओं को पानी की तरह
पीना पड़ता है।
छत के लिए तड़पना पड़ता है।

बिन एक कागज के टुकड़े के,
हम दुनिया में गूंगे होते हैं।
मगर आवाज दिल से आती है,
और याद रखो दिल को
खरीदा नहीं जा सकता।

(31 जनवरी, 2014)

दिल के पन्ने

इन पन्नों को कई बार पढ़ चुका हूं
सुन चुका हूं।
लेकिन इनमें बस
कुछ शब्द सुनाई पड़ते हैं,
पूरा वाक्य कभी नहीं।

इन नटखट शब्दों से वाक्य को
बेतहाशा जानने का मन करता है,
लेकिन वाक्य कहीं खो जाते,
आंखों के सामने नहीं आना चाहते मेरी।
यह किसके दिल के पन्ने हैं?
कुछ कहना ही नहीं चाहते।

शब्द स्पष्ट होने लगते हैं कि
एक लड़की इन पन्नों को
छीन ले जाती है।
मैं समझ जाता हूं।
यह उस औरत के पन्ने थे
जो कहानी कहना नहीं जानती।

(12 सितम्बर, 2014)

सपना

अंधेरी रातों में
सोकर भी जगा रखता यह,
सपना...
कभी-कभी सोचता हूं,
कि किस दुनिया में ले जाता यह,
सपना...
टुकुर-टुकुर मन में झांकता यह,
सपना...
रात को मरने से बचाता यह,
सपना...
मन की पायलों को छनछनाता यह,
सपना...
मन की बन्दूक को चलवाता यह,
सपना...
एक लम्बी छलांग लगवाता यह,
सपना...
चांद पर पहुंचाता यह,
सपना...
सपनों के बिना जिन्दा नहीं रह पाएगा यह इंसान
तो अपना लो इस सपने को
रास्ता तुम्हें अपने आप पता चल जाएगा।

(10 फरवरी, 2014)

सफर बिना लक्ष्य के

रात-दिन सोचता रहता हूं,
कब जाऊंगा सबसे बड़े सफर पे,
सफर बिना लक्ष्य के।
सुनसान, शांत यही सोचा है
मैंने उसके बारे में।
वह सफर जिसमें रास्ता न हो,
बस धूप का पीछा करते रहें।
पहाड़ों के बीच से
हवाओं को खींचके
चल दें हम
सफर बिना लक्ष्य के।
लेकिन जब भी मन को मनाते हैं
'तैयार हो जा एक सफर के लिए'
मन मान जाता है
लेकिन जब हम
धूप, सुनसान और शांत रास्ते पर
निकल रहे होते हैं
तभी मन बोलता है
'अरे भाई, नक्शा मत छोड़ जाना।'

(27 फरवरी, 2014)

मन की जमीन

चुपचाप कोने में छुपा रहता हूं
परछाइयों में मिल जाता हूं
यही करते हो तुम
मन की खुशी चुरा लेते हो,
क्यों नहीं समझते कि
जिन्दगी पर हक हमारा है,
जिन्दगी हमारी है।
और तुम जीने का सहारा
छीन लोगे।
मन की जमीन पर क्यों
कब्जा जमाना चाहती हो।
रोशनी का सहारा क्यों छीनते हो।
लेकिन मुझे पता है कि
एक समय तुम भी मेरी जगह थे
और तुम्हारी जिन्दगी की जमीन को,
कोई अपना हक कहना चाहता था।

(18 अप्रैल, 2014)